मिली के बाल

पढ़ना है समझना

प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : 2009 (1931); 2010 (1932); 2011 (1933); 2011 (1933); 2014 (1936); 2015 (1937); 2017 (1939); मार्च 2018 चैत्र 1940; अगस्त 2018 श्रावण 1940; फरवरी 2019 फाल्गुन 1940; जुलाई 2020 श्रावण 1942

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 340T RPS

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

चित्रांकन – कनक शशि

सज्जा तथा आवरण – निधि वाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर – अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता, नरेन्द्र कुमार वर्मा

आभार ज्ञापन

प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलपमेंट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफ़ेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डॉ. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुज़हत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नयी दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)
978-81-7450-884-3

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। *बरखा* की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। *बरखा* बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए *'बरखा'* की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। *बरखा* पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। *बरखा* से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक *बरखा* को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रानिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 **फोन** : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे, बनाशंकरी III स्टेज, बेंगलुरु 560 085 **फोन** : 080-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 **फोन** : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी, कोलकाता 700 114 **फोन** : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स, मालीगाँव, गुवाहाटी 781 021 **फोन** : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *विपिन दिवान*

मिली के बाल

मिली

मम्मी

मिली के बाल लंबे थे।
मम्मी उसके बालों में दो चोटियाँ बनाती थीं।
मम्मी को मिली के बाल चोटी में गुँथे हुए पसंद थे।

मम्मी मिली के बालों में रोज़ तेल लगाती थीं।
वह तेल लगाकर रोज़ मिली की दो चोटियाँ बना देतीं।
मिली को चोटी बनवाना पसंद नहीं था।

मिली को बाल खुले रखना पसंद था।
उसे फैले-फैले बाल अच्छे लगते थे।
वह उँगली से बालों के लच्छे बनाती रहती थी।

मम्मी चोटी गूँथतीं तो मिली परेशान हो जाती।
वह बहुत कसकर चोटी गूँथती थीं।
मिली को बहुत दर्द होता था।

मिली को लगता कि उसके बाल टूट जाएँगे।
चोटी बनवाते समय मिली चिल्लाती थी।
वह बार-बार मम्मी का हाथ हटाती।

मिली कई बार चोटी खोल ही देती थी।
वह खुले बालों में घूमती रहती।
मम्मी बहुत गुस्सा करती थीं।

मम्मी फीता बाँधतीं तो मिली फीता खोल देती।
वह फीते के धागे निकाल कर हवा में उड़ाती।
मिली फीते से फूल भी बनाती।

मम्मी चिमटी लगातीं तो मिली चिमटी निकाल देती।
मिली चिमटी का कीड़ा बनाकर खेलती रहती।
वह चिमटी के कीड़े में फीता बाँधकर भागती फिरती।

मिली बाल खुले रखना चाहती थी।
मम्मी हमेशा चोटी बनाना चाहती थीं।
दोनों का हमेशा झगड़ा होता था।

मिली मम्मी से परेशान थी ।
मम्मी मिली से परेशान थीं।
दोनों एक–दूसरे से परेशान थीं।

एक दिन मिली सुबह से गायब थी।
मिली के पापा भी घर पर नहीं थे।
मम्मी ने दोनों को बहुत ढूँढ़ा।

मिली पापा के साथ बाज़ार गई थी।
बाज़ार में काफी भीड़ थी।
वे दोनों एक दुकान पर गए।

मिली और पापा दोपहर में बाज़ार से लौटे।
मिली मम्मी के पास भागकर गई।
वह बोली कि लो गूँथ लो मेरी चोटियाँ।

मिली ने बाल छोटे–छोटे कटवा लिए थे।
मम्मी ने मुस्कराकर उसके बालों में हाथ फेरा।
उन्होंने मिली को गले लगा लिया।

अगले दिन मम्मी मिली के बालों के लिए कुछ लाईं।
वह रोज़ की तरह मिली के बालों में तेल मलने बैठ गईं।
मिली ने भी आराम से तेल मलवा लिया।

तोसिया और मिली की और कहानियाँ

अधिक जानकारी के लिए कृपया www.ncert.nic.in देखिए अथवा कॉपीराइट पृष्ठ पर दिए गए पतों पर व्यापार प्रबंधक से संपर्क करें।

स्तर 1
स्तर 2
स्तर 3
स्तर 4

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

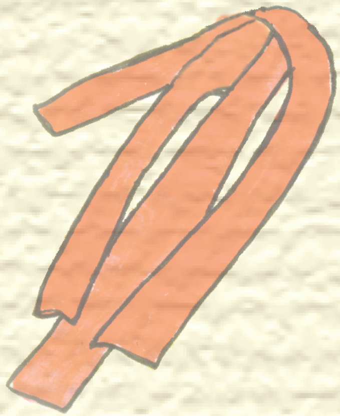

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

2083

विद्यया ऽ मृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा–सैट)
978-81-7450-884-3